REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

प्रभात त्रिपाठी के उपन्यासों में स्त्री — पुरूष का संबंध

डॉ. रेणु सक्सेना[१] , श्रीमती कुमुदिनी भोई[२]
[१]शा. नार्गाजुन स्ना.महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
[२](शोध छात्रा) पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर(छ.ग.)

सारांश:—

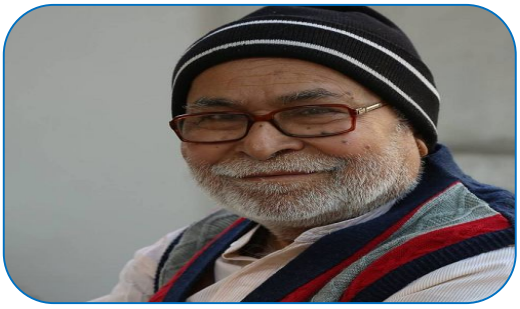

प्रभात त्रिपाठी के उपन्यासों मे अपने जीवन के अनुभवों को आत्मकथात्मक शैली पर स्त्री—पुरूष के संबधो का चित्रण किया है। परिवार में स्त्री—पुरूष का समान महत्व होता है, बिना स्त्री के पुरूष अधूरा होता है, उसके बिना संपूर्ण जीवन की कल्पना नही कर सकता है, स्त्री—पुरूष के अतंरंग मन की रानी होती है। प्रभात त्रिपाठी स्त्री के महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा कि स्त्री काली हो या गोरी, अफसर हो या काम वाली नैसगिक सौदंर्य की मालकिन होती है, उन्होने अपने स्त्री पात्रो में कामज इच्छाओं की ओर इंगित किया है। स्त्री अपने परिवार के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है। स्त्री का जीवन निस्वार्थ होता है, वह जब बेटी रहती है तो पिता के मनोनुकुल कार्य करती है जब पत्नी रहती है तब भी वह अपने पति के लिए सहयोग करती है, जब वह मॉ बनती तो अपने संतान के लिए अपने मन की आंकाक्षाओ को कुर्वान कर देती है। उनके लालन—पालन करके उनके मन—मुताबिक चलती है। स्त्री अपने स्वेच्छा से कभी भी अपना जीवन—यापन नही करती है, वह परिवार के अपने ऐच्छिक कार्यो को छोड़ देती है। प्रभात त्रिपाठी की स्त्री पात्र आधुनिक स्त्री है वह अपने मन के अनुसार कार्य करती है वह यथार्थ अनुसरण कर, यथार्थ जीवन—यापन करती है। वह पुरूषो के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलती है। सामाजिक नैतिकता के बीच में स्त्री—पुरूष के संबंध पति—पत्नि जैसे रिश्ते, माता,—पुत्र, पिता—पुत्री,भाई—बहन संबंध ही अच्छे लगते है।, लेकिन जब हम समाज में स्त्री—पुरूष के संबंधों में प्रेमी प्रेमीका या यौन कुठा के बारे में देखते है। तो हमारे मन मे समाज का दूसरा पहलू का ज्ञान होता है। समाज मे हो रहे ऐसे स्त्री—पुरूष संबंध को उद्घाटित किया है।

वर्तमान समय में होने वाले को दर्शाने वाला प्रभात त्रिपाठी उपन्यासों स्त्री—पुरूष के संबंधों की विसंगतियों को दिखाया है। आज के दौर मे पति—पत्नि का संबंध सबसे अनोखा होता है।

उनके उपन्यास 'सपना शूरू' में दीपा एवं शेखर के प्रेम विवाह का अंग है। दीपा एवं शेखर एक ही शहर के निवासी है, दोनों के परिवार में आत्मीय संबंध है, शेखर दीपा पर आसक्त है, लेकिन दीपा, शेखर दा से प्रेम करती है, और शेखर राउरकेला बुलाती है, दोनो एक दूसरे मन में उनकी कामनाएँ उमड़ती रहती है। होटल के कमरे में वह दोनों एक दूसरे करीब आने एवं शादी का फैसला करते है इसलिए दीपा की स्वीकृति के बाद भी रोमनीपन का अनुभव करते हुए भावुंकता के साथ शेखर सोचता है,

''उसके गालों पर लुढ़क रहे आंसू की बूंदो को पोंछते हुए, मैने अनुभव किया, कि यह दीपा का मन है। उसकी व्यथा और करूणा की कविता को धारण करने वाले देह है। यह मुझे अपने बहुत पहले के

सुन्दर खेतो की ओर ले जाती हुई दीपा की देह को इस तरह छूना, उसे पाना है। एक बहुत शांतलय में बजती हुए गीत के करीब से गुजरना है, उसकी देह को इस तरह करीब से देखना।'' [१]

प्रभात त्रिपाठी की दूसरी उपन्यास 'अनात्मकथा'' में गीता एवं उसके पति संबंध थोड़ा यंत्रिक है, वह मानवीय भावनाओं से जुड़ी हुई है।वह बच्चों से बहुत प्यार करती है और उनके साथ समय बिताते हुए सुख पाती है। वह जीवन के छोटे सुखो सहजता ग्रहण करती है। अपने पति की तरह छोटी छोटी बातों पर बैचेन नही होती है वह धीर –गंभीर है। गंभीरता एवं जिम्मेदारी पूर्वक जीवन बनाना ही उसके जीवन की सच्चाई है अपनी चिड़चिड़ाहट के बावजूद वह अपने पति के साथ भी, कहीं अप्रसन्न नहीं लगती। इसलिए कई बार ऐसा भी होता है। कि ये बिलकुल एकांत में एक–दूसरे के साथ अपना समय बिताने है, हालंकि यह भी लगता है कि यौन सुख के प्रति उसका आकर्षण अब बिलकुल नही रह गया है। उसके चरित्र की इस पक्ष को , सारसंक्षेप की तरह बताये हुए लेखक ने लिखा है,

''मीता अपने बगीचे में क्यारियॉ सींचने के काम को, किसी किस्म की सरकारी या गैर सरकारी बौध्दिक बहस से बेहतर मानती थी, सच तो यह है, कि वह अपने समूचे वजूद को बहस के बाहर का एक हसीन, एक करूण बुलबुला भर मानती है।'' [२]

प्रभात त्रिपाठी के उपन्यास ''किस्सा बेसिर पैर'' में जब नायक अपनी पत्नि से बहुत प्रेम करता है, उसके बिना जीवन की कल्पना नही कर सकता। लेकिन जब उसको अपनी पत्नि के कैसंर की बीमारी के बारे में जानकारी हुई तो नायक अपनी पत्नि के साथ मरने का ख्याल करता है। दोनों के बीच प्रस्ताव होता है कि किसी बड़े शहर को किसी बहुत ऊॅची इमारत के छत पर चढ़ जाएँगे और वहॉ से एक साथ नीचे छलॉग लगा देंगे। अपनी पत्नी के मृत्यु के बाद नायक उसको सपने में देखता है,तो यर्थाथ रूपक अनुभव होता है।" [३]

''उस समय रात को कोई चार बजे रहे होंगे। घर के सामने के कमरे में मै लगभग धुत्त नीदं में था, कि अचानक मुझे लगा बहुत परिचित उॅगालियॉ मेरी पीठ सहला रही है। मेरी नींद खुली और पलट कर मैंने देखा कि वह है। उन दोनो उसके शरीर में अभी महज त्वचा और हडिडयॉ थी, लेकिन ऑखो में राजकमल की कविता गूॅज रही थी। जिसे हमारे एकांत में वह गीत की तरह गाती थी , कि हम जुड़वॉ बच्चे है, एक दूसरे की पीठ पर फूल पत्ती ऑकते है। मैने कखट बदली और आहिसा से उसे चूम लिया। उसने और भी आहिस्ता से कहा कि चलो बाहर चलते है। मैं उसे सहारे से बाहर लाया। वह दरवाजे के सामने पेवठे पर बैठ गईं। फिर कहा कि गुड़ाखु करते है। मंजन घिसने के बाद आकाश की ओर ताका और पूछा कि क्या आज पूर्णिमा है। शायद में चुप रहा ब्रम्हमुर्हूत का उजाला गोल चांद था और निरम्र आकाश। हम दोनो के बीच हाथ–भर की दूरी थी और तभी अप्रत्याशित के आक्रामक सुख की तरह उसने मुझे इस तरह आलिंगन में जकड़ा, कि मुझे यकीन नही हुआ कि कुछ घंटो बाद इसे चल' देना है। ''यह मृत्यु है,'' वह बुदबुदाई।" [४]

उनके उपन्यासों में पति–पत्नि का संबंध प्रेम व विश्वास का होता है, पत्नि की मृत्यु हो जाने पर अकेला हो जाता है। उसका एकाकीपन उसको जीने नहीं देता है। और उसी के ख्यालो में डूबता उतरता रहता है। नायक अपने यौन इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपने घर मे काम वाली बाई को देखकर ही यौन–पिपासा की पूर्ति करता है

स्त्री पुरूष की अर्ध्दागिनी होती है, उसे अच्छे बुरे कर्मो को सहन करती है, अपनो के द्वारा अपमानित होने पर उसे सहती है। यह स्त्री की कमजोरी नहीं वरन उसकी सहनशीलता का परिचायक है, लेकिन जब पुरूष – स्त्री पती को सबक सिखाती है। जिस प्रकार कामवाली बाई सीमा अपने शराबी पति को शराब की आदत के कारण घर का सब कुछ बेंच देता है, वह ऐसा मनुष्य के रूप में राक्षस था कि वह शराब के नशे में कच्चा आलू, कच्चा चावल तक चबाकर खा जाता था। लेकिन तब भी उसी पति के लिए करवा चौथ व तीजा रखती है, और उसके लम्बी उम्र की कामना करती है।

''झगड़कर नहीं, जी भर के उसकी मरम्मत करके आ रही हूॅ। उसने फूसफनाते हुए कहा था।

मैनें मुस्कुराते हुए उसे बधाई दी और सोचा कि नारी मुक्ति के लिए उठाया गया उसका यह कदम, विचार के स्तर पर चाहे कितना भी गवॉर और अनाधुकि क्यों न हो, व्यवहार स्तर पर महज स्वत: स्फूर्त ही नही जरूरी भी था।

'' आज सुबह से चार घरो मे झाड़ू पोंछा और बर्तन निपटाने के बाद मुझे जोर की भूख लग रही थी। मैनें सोचा घर जाकर चावल और आलू की खिचड़ी बनाकर खालूँगी। पहुँची, तो देखा घर में सारे डब्बे बिखरे पड़े है। जिस डब्बे में पाव डेढ़ पाव चावल बचा था, वह सफाचट और खुला पड़ा है दरवाजे पर।'' [५]

समाज में स्त्री–पुरूष का संबंध संवेदनशील है क्योकि स्त्री एवं पुरूष का दो आधार शीलाएँ है, जिसमें अच्छे समाज का निर्माण होता है। जहाँ की स्त्री जितना अधिक सुसंस्कृत एवं सुशिक्षित होती है, वहाँ का समाज उतना ही परिपक्व होता है। प्रभात त्रिपाठी के उपन्यासो में ऐसा ही स्त्री–पुरूष संबंधों में बहन–भाई का संबंध है। नायक के बहन बिन्ना ने विवाह नहीं किया। वह स्त्रीरोग विशेषज्ञ है, जो रायगढ़ के प्रसिध्द चिकित्सक है, जो समाज के कल्याण के लिए हर समय तत्पर रहती है। वह एक अच्छी चिकित्सक होने के साथ अच्छी इन्सान है, उनके नगर के आस–पास के लोग उन्हें 'नानी' कहकर पुकारते है। वह अपने विदुर भाई का ख्याल रखती है। वह अपने अनव्याही भाँजी व अपनी माँ का भी देखभाल करती है। नायक अपने बहन से अधिक प्रेम करता है, क्योंकि उसकी एक मात्र संतान का नौकरी मुम्बई में होना उसके एकाकीपन का कारण बनता है। वह उसकी चिकित्सक बहन का प्रेम अद्वितीय प्रेम का रूपांकन करती है।

आज के समय में नारी अपने परिवार के लिए समय तो देना चाहती है, पर वह घर के कामो के साथ बाहर का भी कार्य करती है। नायिका को जब पता चलता है कि उसकी मृत्यु होने वाली है, तब वह अपने पुत्र को समय न दे पाने का दुख घरकर जाता है, जिस पुत्र को ज्यादा समय देना था उसको उसने भरपूर उपेक्षा की थी। शायद यही कारण है कि जब वह कैंसर की बीमारी की जाँच के लिए मुम्बई गयी थी, तो वहाँ से उसने चिठ्ठी मे लिखा था कि जिसके प्रति सबसे ज्यादा जिम्मेदारी थी, लगता है, उसी के प्रति अन्याय किया है।

निष्कर्ष :–

आज के समय में ऐसे साहित्य एवं साहित्यकारों की आवश्यकता है, जो यथार्थ में होने वाले घटनाओं का लेखन कर सके। समाज मे हो रहे तीव्र परिवर्तनो को समझते हुए तथा आज के पीढ़ी में होने वाले मानसिक बदलाओं को कथा साहित्य के माध्यम से समाज तक पहुँचा सके। प्रभात त्रिपाठी के उपन्यास में स्त्री–पुरूष संबंधों को दर्शाया गया है, जिनमें स्त्री, पुरूष के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। वर्तमान समाज में नारी व पुरूष का संबंध पति–पत्नि के रिश्ते से ऊपर उठकर समानता का भाव लेकर एक दुजे के लिए बनाया है। यदि दोनों में से किसी एक की मृत्यु हो जाती है। तो दूसरा उसके बिना जीवन कल्पना नहीं कर सकता है। उसके साथ जीवन का दाह तो नहीं कर सकते है, लेकिन मृत्यु पर्यन्त हम उसी के ख्यालो में जीवन को जीते हैं, वह क्यों न सपने के रूप में हो या कल्पना के रूप में। ऐसा मनुष्य का जीवन नायक ने अपनी पत्नि के बिना जीना दुश्कर माना है।

संदर्भ:–

१. त्रिपाठी, प्रभात: सपना शुरू, हापुड़ – २४५१०१ प्रथम संस्करण पृष्ठ २८
२. त्रिपाठी, प्रभात: अनात्मकथा, बीकानेर, वाग्देवी प्रकाशन सुगन निवास, चंदन सागर पृष्ठ ८४
३. त्रिपाठी, प्रभात: किस्सा बेसिर पैर, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन लि. १ बी, नेता जी सुभाश मार्ग दरियागंज, पृष्ठ ६९
४. त्रिपाठी, प्रभात: किस्सा बेसिर पैर, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन लि. १ बी, नेता जी सुभाष मार्ग दरियागंज, पृष्ठ १७५
५. त्रिपाठी, प्रभात: किस्सा बेसिर पैर, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन लि. १ बी, नेता जी सुभाष मार्ग दरियागंज, पृष्ठ १७६